अध्याय-2

साहित्य पुनरावलोकन

2.1 परिचय

साहित्य पुनरावलोकन में पुनरावलोकन शब्द दो शब्द से मिल कर बना है - पुनः और अवलोकन। अवलोकन का अर्थ है जांच-पड़ताल करना। साहित्य पुनरावलोकन के अंतर्गत हम अपने शोध विषय से संबंधित पहले से मौजूद किसी साहित्य या शोध पत्रिका का अध्ययन करते है। इसके अंतर्गत हम इस बात का अध्ययन करते है कि हमारे द्वारा चुने गए क्षेत्र में कितना काम हो चुका है एवं किस प्रकार का काम हुआ है, अभी शोध का नया ट्रेड क्या है आदि का। किसी भी प्रकार के शोध में साहित्य पुनरावलोकन करने के पीछे जो प्रमुख कारण है उसका वर्णन हम निम्न प्रकार से कर सकते है :-

ज्ञान की खाई (Knowledge gap) ढूंढने के लिए :- वैसे तो साहित्य पुनरावलोकन करने के कई कारण है लेकिन उन कारणों में सबसे पहला और प्रमुख नॉलेज गैप ढूंढना है। नॉलेज गैप ढूंढने का अर्थ है उस क्षेत्र में कौन-कौन सा काम हो चुका है किस क्षेत्र में काम होना अभी बाँकी है। अगर हम सही ढंग से साहित्य पुनरावलोकन किए बिना अपना शोध शुरू कर देते है तो हो सकता है हम जो काम आज करें कोई और उस काम को पहले ही कर चुका हो। इस पर उस काम की पुनरावृति हो जाएगी इसलिए शोध कार्य में शोध समस्या ढूंढने के लिए साहित्य पुनरावलोकन करना अत्यंत आवश्यक है।

Define Concept :- साहित्य पुनरावलोकन के द्वारा ही हम अपने कान्सैप्ट को सही तरीके से समझ सकते है और अपना एक नया कान्सैप्ट दे सकते है। साहित्य

पुनरावलोकन के द्वारा हम यह जान सकते है हमने जो शोध समस्या चुना है उस समस्या पर कहीं कोई काम हुआ है या नहीं। अगर उसपर कोई काम हुआ है तो किस विधि से हुआ है। इस बात का अध्ययन कर हम यह चुन सकते है कि मुझे अपने शोध के लिए कौन सा विधि चुनना आसान होगा।

साहित्य पुरावलोकन के दौरान हम इस बात का अध्ययन करते है कि हम जिस क्षेत्र में शोध करना चाह रहे है उस क्षेत्र में इससे पहले क्या-क्या शोध हो चुका है और हमारी शोध उस क्षेत्र में कैसे उपयोगी साबित होगा अर्थात हमारी शोध ज्ञान की खाई को कैसे भरेगा। साहित्य पुरावलोकन के मदद से हम अपनी शोध सीमा निर्धारित करते है।

जब हम अपने शोध के लिए साहित्य पुनरावलोकन कर रहे होते है तो हमारे पास जो सबसे बड़ा प्रश्न उठता है वह यह है कि हम कितने समय पीछे तक के साहित्य का पुरावलोकन करेंगे। इसके लिए जो एक मानक पैमाना है वह यह है कि जब हम मास्टर के लिए साहित्य पुरावलोकन कर रहे होते है तो हम पिछले 10 सालों के साहित्य का पुरावलोकन करते है एवं पीएचडी के लिए हमे इससे पहले के साहित्य का भी पुरावलोकन करना चाहिए।

संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण से तात्पर्य उस अध्ययन से है जो शोध समस्या के चयन के पहले अथवा बाद में उस समस्या पर पूर्व में किए गए शोध कार्यों, विचारों, सिद्धांतों, कार्यविधियों, तकनीक, शोध के दौरान होने वाली समस्याओं आदि के बारे में जानने के लिए किया जाता है।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण मुख्यत: दो प्रकार से किया जाता है :-

प्रारंभिक साहित्य सर्वेक्षण(Preiiminary survey of literature)

प्रारंभिक साहित्य सर्वेक्षण शोध कार्य प्रारंभ करने के पहले शोध समस्या के चयन तथा उसे परिभाषित करने के लिए किया जाता है। इस साहित्य सर्वेक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य यह पता करना होता है कि आगे शोध में कौन-कौन सहायक संसाधन होंगे।

व्यापक साहित्य सर्वेक्षण(Broad survey of literature) - व्यापक साहित्य सर्वेक्षण शोध प्रक्रिया का एक चरण होता है। इसमें संबंधित साहित्य का व्यापक अध्ययन किया जाता है। संबंधित साहित्य का व्यापक सर्वेक्षण शोध का प्रारूप के निर्माण तथा डाटा/तथ्य संकलन के कार्य के पहले किया जाता है।
साहित्य पुनरावलोकन के तत्त्व -

शीर्षक - शीर्षक का मुख्य काम होता है पाठक शीर्षक देख कर यह समझ जाए कि इसे पढ़ने की जरूरत है या नहीं। शीर्षक में मुख्यतः उपयोगी तत्व का पता चल जाए। शिरसहक से यह पता चले कि यह किसी चीज का पुनरावलोकन है। शीर्षक जितना संभव हो सके उतना छोटा हो लगभग आठ से बारह शब्द । शीर्षक में प्रयुक्त शब्द संदिग्ध न हो।
लेखकों की सूची - लेखकों की सूची के अंतर्गत हम लेखकों का नाम देते है। अगर लेखकों की संख्या एक से ज्यादा हो तो लेखकों का नाम हम सूची के रूप में लिखते है।
सारांश - इसके अंतर्गत मूल्यांकन का सारांश लिखते है। सारांश लिखने के लिए हम वर्तमान काल का प्रयोग करते है। विधि एवं सामाग्री कों भूतकाल में लिखते है और

निष्कर्ष को वरमान काल में लिखते है। सारांश की लंबाई हम 200 से 250 शब्द तक रखते है।

विषय सूची - लिखे गए पुरनावलोकन के लिए विषय सूची बनाई जाती है जिसमें यह दर्शाया जाता है कि इस पुरनावलोकन में किस-किस विषय पर चर्चा किया गया है।

परिचय - साहित्य पुरनावलोकन के परिचय वाले भाग में संदर्भ के बारे में चर्चा, किस चीज के बारे में पुरनावलोकन किया जा रहा है इसकी चर्चा होती है। इसमें मुख्यतः तीन तत्व होते है -

विषय पृष्ठभूमि- इसके अंतर्गत शोध विषय के ऐतिहासिक और सामान्य बातों की चर्चा की जाती है।

समस्याएँ - समस्याएँ के अंतर्गत शोध समस्याएँ के बारे में चर्चा करते है।,जिस समस्या के लिए शोध किया जा रहा है।

प्रेरणा/प्रामाणिकता - इसके अंतर्गत इस बात की चर्चा की जाती है कि इस शोध को करने की प्रेरणा कहाँ से मिली।

परिचय वाले भाग की लंबाई बॉडी के लंबाई का 10 से 20 प्रतिशत तक होता है।

बॉडी : सामाग्री और मुख्य बातें- यह पुरनावलोकन का मुख्य भाग होता है। इसके अंतर्गत सामाग्री और मुख्य बातें की चर्चा करते है। यह पूरे टेक्स्ट का 70 से 90 प्रतिशत तक होता है।

निष्कर्ष : इसके अंतर्गत परिचय में जो प्रश्न पूछा गया था उसका निष्कर्ष दिया जाता है। जो प्रश्न अनुतरित्त रह गया उसके बारे में भी चर्चा की जाती है। यह पूरे टेक्स्ट का लगभग 5 से 10 प्रतिशत तक होता है।

संदर्भ सूची - इसके अंतर्गत किताब एवं पत्रिकाओं की सूची दी जाती है जिसे साहित्य पुरनावलोकन के दौरान पढ़ा गया होता है। इसके लिए APA(American Physiological Association) फॉर्मेट का इस्तेमाल किया जाता है।

कौन है वह? चमत्कारी बालक दिग्विजयी धर्मयोद्धा चुंबकीय व्यक्तित्व भगवा संन्यासी अथक यात्री महान् संगठक राष्ट्र-निर्माता विधि-निर्माता अपूर्व वक्ता अद्भुत कवि क्रांति दूत युग-प्रवर्तक अद्वितीय प्रेरक समाज सुधारक वेदों का प्रवक्ता कृपालु संत या भगवान् शंकर का अवतार साक्षात् शंकर! अपनी ३२ वर्षा की अल्पायु में शकर्षणकर ने साधु -संतो तथा ज्ञान-करुणा का मेल करा दिया ,जिससे व्यक्त है की भारत ने एक ऐसे उदात्त व्यक्ति जन्म दिया था।

2.2 साहित्य पुनरावलोकन

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु अग्र वर्णित साहित्यों का अध्ययन किया गया-

- आदि शंकराचार्य द्वारा रचित प्रमुख उपनिषदों के भाष्यों का अध्ययन किया कुछ को पुस्तक के रूप में पढ़ा, और कुछ को आनलाइन मंचों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से समझने का प्रयास किया है।समय समय पर कुछ विदूषकों शिक्षाविदों और आध्यात्मिक गुरुओं से भी चर्चा करते हुए जगतगुरू आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत दर्शन को समझने का एक लघु प्रयन्त किया।

- **किनखाबवाला ए.भावेश(2018)-** (शोध कर्ता बी.के.स्कूल ऑफ बिजनेस, गुजरात विश्वविद्यालय। द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य किया गया जहां आदि शंकराचार्य के दर्शन से किस प्रकार कुशलता पूर्वक प्रबंधन किया जा सकता है पर का अध्ययन किया गया। **प्रबंधकों / सीईओ के लिए सीखे जाने वाले पाठ के साथ आधुनिक समय में प्रबंधन और प्रासंगिकता के सिद्धांतों और प्रथाओं के विशिष्ट संदर्भ के साथ जगतगुरु आदिशंकराचार्य पर एक शोध अध्ययन।**

- **श्री पुरोहित स्वामी और डब्ल्यू.बी.येट्स-द टेन प्रिंसिपल** उपनिषद ,इस पुस्तक में लेखक ने भारतीय दर्शन का और उपनिषदों का संक्षिप्त अपितु गागर में सागर की तरह वेदांत दर्शन का लेखन किया है, मुझे अद्वैत दर्शन समझने में मदद मिली।
- मध्यप्रदेश **9फरवरी2017 "एकात्म यात्रा"आदि** शंकराचार्य अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रखर प्रवक्ता सनातन संस्कृति के पुनरूद्धारक एवं सांस्कृतिक एकता के देवदूत-आदि शंकराचार्य पर की पुण्य स्मृति में आयोजित ओमकारेश्वर में किया गया था,जिसे बाद में एक पुस्तक के रूप में विभिन्न आयोजकों, वक्ताओं और संतों के आदिशंकराचार्य पर कहें गए अपने विचारों का ताना-बाना है। यहां से मुझे प्रस्तुत शोध कार्य करने की प्रेरणा और उर्जा मिली।
- **विद्रोही संन्यासी**

भारतीय प्रशासनिक सेवा में पदस्थ **माननीय राजीव शर्मा**]वर्तमान कमिश्नर शहडोल मध्यप्रदेश शासन द्वारा रचित **उपन्यास विद्रोही संन्यासी-आदिशंकराचार्यके जीवन पर आधारित उपन्यास जिसमें आदि शंकराचार्य के जीवन के अनेकों पहलुओं और वेदान्त दर्शन को समझने में मदद मिलती रही। आदिशंकराचार्य के पास आज के युवाओं के सभी प्रश्नों का उत्तर है, उनकी जिज्ञासाओं और कुंठाओं के भी।**

श्री नगर से कामरूप-कामाख्या और कलकत्ता से कोच्चि तक आदिशंकर के नाम की पारसमणि हमारा मार्ग प्रदीप्त करती गई।

उस महान् यात्री के पदचिह्न खोजते हुए अनायास ही भारत भर की प्रदक्षिणा कब संपन्न हो गई पता नहीं चला। हर सुधार कालांतर में स्वयं रूढ़ि बन जाता है, हर क्रांति को पोंगापंथी बनते हुए और मुक्ति-योद्धाओं को तानाशाह बनते देखना इतिहास की आदत है।

वे विद्रोही थे, उन्होंने मानव बलि समेत तत्समय के ढोंग, पाखंड, वामाचार का प्राणपण से विरोध किया। संन्यासी होते हुए उनमें यह कहने का साहस था कि मैं न मूर्ति हूँ, न पूजा हूँ, न पुजारी हूँ, न धर्म हूँ, न जाति हूँ।

आदिशंकराचार्य के पास आज के युवाओं के सभी प्रश्नों का उत्तर है, उनकी जिज्ञासाओं और कुंठाओं के भी। उनसे बड़ा प्रबंधन गुरु कौन होगा, जिसने शताब्दियों पहले केरल के गाँव से यात्रा प्रारंभ कर संपूर्ण राष्ट्र की चेतना और जीवन-पद्धति को बदल दिया।

जो संन्यासी संसार के सारे अनुशासनों से परे हुआ करते थे, उन्हें अखाड़ों और आश्रमों में संगठित कर अनुशासित और नियमबद्ध कर दिया। बौद्धों और हिंदुओं के संघर्ष को शांत कर दिया। शैवों, वैष्णवों, शाक्तों, गाणपत्यों, सभी को एक सूत्र में पिरो दिया।

सम्मतियां

परम पूज्य स्वामी शिवानंदजी

श्री शंकर महाप्राज्ञों में अग्रणी और भारतमाता द्वारा उत्पन्न महान् आत्मा थे। वे महान् तत्त्वचिंतक थे, जिन्होंने अद्वैत वेदांत को व्यवस्थित रूप प्रदान किया। वे सच्चे दार्शनिक, अटल तार्किक, गतिशील व्यक्तित्ववाले और महान् नैतिक व आध्यात्मिक शक्तिपुंज थे, उनकी ग्रहणशक्ति और व्याख्या करने की शक्ति असीम थी।

विल ड्यूरेंट

वर्ष की अल्पायु में शंकर ने साधु-संतों तथा ज्ञान-करुणा का मेल करा दिया, जिससे व्यक्त है कि भारत ने एक ऐसे उदात्त व्यक्ति को जन्म दिया था।

–स्वामी रंगनाथानंदजी 'एटेर्नल वॉल्यूस फॉर ए चेंजिंग सोसाइटी' में

एक ऐसा एकाकी व्यक्ति, जिसकी सहचरियाँ थीं उनकी व्यापक प्रज्ञा और गहन सहानुभूति। समूचे भारत की लंबाई-चौड़ाई को नापकर उसके मस्तिष्क और हृदय को जीत लेना इतिहास में, भारतीय इतिहास में भी एक अपूर्व घटना है। शंकर ने लोगों के मन और हृदय पर विजय पा ली। उन्होंने भावनाशीलता, प्रेम और आत्मिक आदर्शवाद के साम्राज्य की स्थापना की। शंकर के उदाहरण से हम उस व्यक्ति की महानता का अनुमान लगा सकते हैं, जो विश्व को इस प्रकार मार्ग दिखाता है। शंकर में हम एक बौद्धिकता और जनसाधारण के प्रति भावुकता का सम्मिश्र रूप पाते हैं। आज हिंदुस्तान में बौद्धिक व्यक्तियों और जनसाधारण का समर्थन पानेवाला कोई एक ऐतिहासिक महत्त्व का गुरु है तो वह शंकर है।

पं, जवाहरलाल नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में

32 वर्ष के अल्पकालीन जीवन में शंकर ने कई दीर्घकालीन कार्य किए और भारत पर अपने सशक्त मस्तिष्क एवं समृद्ध व्यक्तित्व का ऐसा प्रभाव डाला, जो आज भी अमिट है। वह दार्शनिक और विद्वान्, अज्ञेयवादी और रहस्यवादी तथा कवि और संत का

विलक्षण मिश्रण थे, साथ ही व्यावहारिक सुधारवादी और संगठक थे। उन्होंने ब्राह्मणवादी ढाँचे में पहली बार दस धार्मिक क्रम रचे, जिनमें चार आज भी जीवित हैं। अपने चार महान् आम्नाय मठों को उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में स्थापित कर उन्होंने भारत की सांस्कृतिक एकता की भावना को प्रोत्साहित करना चाहा। ये चारों स्थान पहले भी भारत के तीर्थ रहे हैं, अब और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं।

डॉ एस राधाकृष्णन

शंकर का जीवन कई सारे विरोधाभासों का समुच्चय प्रतीत होता है। वह दार्शनिक और कवि, विद्वान् और संत, रहस्यवादी और धार्मिक सुधारवादी, सबकुछ थे। यदि हम उनके व्यक्तित्व को याद करने का प्रयास करेंगे तो इनके इतने गुण उभरते हैं, जो पृथक्-पृथक् छवि प्रस्तुत करते हैं। कोई एक उन्हें युवावस्था में बौद्धिक महत्त्वाकांक्षा में दीप्त एक निर्भीक और दृढ़ तार्किक के रूप में देखता है, कोई दूसरा उन्हें चतुर राजनीति के महाप्राज्ञ के रूप में स्वीकार करता है, जिन्होंने लोगों में एकता का मंत्र फूँकने का प्रयास किया, तीसरे की दृष्टि में वह शांत दार्शनिक हैं, जो निरुपम बोधकता के साथ जीवन और विचारों की विसंगतियों को एकनिष्ठ होकर समझाने का प्रयास कर रहे हैं, और चौथे के लिए वह ऐसे रहस्यवादी हैं, जो अब तक ज्ञात लोगों में सबसे बड़े हैं। उनके समान सार्वभौम मस्तिष्कवाले कम हुए हैं।

सिस्टर निवेदिता

पाश्चात्य लोग श्रीशंकराचार्य जैसे व्यक्तित्व की शायद ही कल्पना कर सकते हैं। हम असीसि के फ्रांस की भक्ति, अबेलार्ड की बौद्धिकता, मार्टिन लूथर की शक्ति और स्वतंत्रता तथा इग्नेटियस लोयोला की राजनैतिक दक्षता देखकर आश्चर्य और प्रसन्नता से परिपूर्ण हो जाते हैं, परंतु कौन इन सभी को एक ही व्यक्ति में इकट्ठा पाने की कल्पना कर सकता है।

राजीव शर्मा

. श्री रामनारायण शर्मा ने कराया था। मैं आठ या नौ साल का था, वे लंबी यात्रा से लौटे थे, सदा की तरह ढेर सारी किताबों के साथ, उनमें सबसे रोचक आदिशंकराचार्य की जीवनगाथा थी, कॉमिक्स से भी ज्यादा दिलचस्प। मेरे बालमन में वह कथा सदा के लिए अंकित हो गई और उसी का प्रस्फुटन है यह उपन्यास। यह पुस्तक असल में एक संयुक्त प्रयास है मेरे असंख्य शुभेच्छुओं का, स्वजनों और सहृदय भारतीयों का, जिन्होंने देश के हर कोने से सामग्री जुटाने में मेरी अमूल्य सहायता की है। सुदूर कालड़ी से केदार तक सर्वत्र मिले स्नेह–ऋण का ब्याज है यह उपन्यास। श्रीनगर से कामरूप-कामाख्या और कलकत्ता से कोच्चि तक आदिशंकर के नाम की पारसमणि हमारा मार्ग प्रदीप्त करती गई। उस महान् यात्री के पदचिह्न खोजते हुए अनायास ही भारत भर की प्रदक्षिणा कब संपन्न हो गई, पता नहीं चला। आधुनिक भारत के अधिकांश लोग उनके व्यक्तित्व और कृतित्व से अपरिचित हैं, जो परिचित भी हैं, उनमें से अधिकांश के मस्तिष्क में उनकी छवि एक पारंपरिक धर्माचार्य जैसी है। किसी युग-प्रवर्तक कर्मयोगी, क्रांतिकारी सुधारक और सर्वसमन्वयी राष्ट्र निर्माता की नहीं। उनके अद्वितीय व्यक्तित्व को पूजा ज्यादा गया, किंतु समझा सबसे कम गया है। वे हमारे इतिहास के सबसे गलत ढंग से समझे गए महापुरुषों में भी शिखर पर हैं। उनके जीते जी उन्हें 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा गया, तब आज के अज्ञान पर आश्चर्य कैसे करें। क्या आपने कभी सोचा है कि हमारा आज का

भारत उनके द्वारा स्थापित चार मठों के चतुर्भुज के भीतर ही बचा है? तो क्या उन्हें भावी विखंडन का सदियों पूर्व ही आभास था? यह उपन्यास हमारी पीढ़ी से ज्यादा उस युवा पीढ़ी के लिए लिखा गया है, जिसे उसी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रलय का सामना करना है, जिसका सामना आदिशंकर ने अपने युग में किया था। हर सुधार कालांतर में स्वयं रूढ़ि बन जाता है, हर क्रांति को पोंगापंथी बनते हुए और मुक्ति योद्धाओं को तानाशाह बनते देखना इतिहास की आदत है। वे विद्रोही थे, उन्होंने मानव बलि समेत तत्समय के ढोंग, पाखंड, वामाचार का प्राणपण से विरोध किया। संन्यासी होते हुए उनमें यह कहने का साहस था कि मैं न मूर्ति हूँ, न पूजा हूँ, न पुजारी हूँ, न धर्म हूँ, न जाति हूँ। आदिशंकराचार्य के पास आज के युवाओं के सभी प्रश्नों का उत्तर है, उनकी जिज्ञासाओं और कुंठाओं के भी। उनसे बड़ा प्रबंधन गुरु कौन होगा, जिसने शताब्दियों पहले केरल के गाँव से यात्रा प्रारंभ कर संपूर्ण राष्ट्र की चेतना और जीवन पद्धति को बदल दिया। जो संन्यासी संसार के सारे अनुशासनों से परे हुआ करते थे, उन्हें अखाड़ों और आश्रमों में संगठित कर अनुशासित और नियमबद्ध कर दिया। बौद्धों और हिंदुओं के संघर्ष को शांत कर दिया। शैवों, वैष्णवों, शाक्तों, गाणपत्यों, सभी को एक सूत्र में पिरो दिया। उस अद्भुत तेजस्वी बालक, चमत्कारी किशोर और सम्मोहक युवा शंकर की यह कथा आपको उनके विख्यात जीवन के अज्ञात प्रसंगों का दिग्दर्शन करा सके, ऐसी आशा करता हूँ। स्वाधीनता दिवस, 2020 –राजीव शर्मा किपलिंग कोर्ट, पेंच नेशनल पार्क, जिला सिवनी, म.प्र.

धर्मराजेश्वर मध्य भारत के मालवा में दशपुर एक प्राचीन नगर है, कहते हैं कि मंदोदरी यहीं की थी। इसी दशपुर में शैवों और वैष्णवों का मन-मुटाव आपसी शत्रुता बन चुका था। गगनचुंबी शिवालय के गर्भगृह में 10 फीट ऊँचाई का एक विशाल अष्टमुखी शिवलिंग स्थापित था। शिवालय से सटकर बहती शिवना नदी में भक्तजन स्नान कर पवित्र होते। गेरुआ पत्थर के शिवलिंग पर आठ विशाल मुखमुद्राएँ भी चारों दिशाओं में ऊपर-नीचे एक-एक मुख हास्य, रौद्र, शांत सभी रसों को व्यक्त करती हुई मुद्राएँ भक्तों

और श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र। जब शैवों और वैष्णवों का संघर्ष हुआ तो शिवालय ध्वस्त और मूर्ति लापता। यहाँ से 100 किलोमीटर दूर भी यही संघर्ष एक और आस्था केंद्र पर संकट बनकर आया था। दशपुर से राजपूताने की दिशा में एक अद्भुत शिवमंदिर है, नाम है धर्मराजेश्वर। यह मंदिर शैल शिल्पकला का जादुई नमूना था। दरअसल यह मंदिर जमीन पर नहीं है, बल्कि जमीन से तीन मंजिल नीचे है, इसलिए मंदिर प्रांगण दूर कहीं से भी दिखाई नहीं देता। इसे एकदम पास पहुँचकर ही जमीन से नीचे झाँकने पर ही देखा जा सकता है। ऊपर से चट्टानों को काटकर सीढ़ियाँ नीचे तक गई हैं, जिनसे उतरने पर मंदिर प्रांगण में पहुँचा जा सकता है। धर्मराजेश्वर को बनाने में ईंट, गारे या चूना का उपयोग नहीं हुआ था, न शिलाखंडों या संगमरमर के टुकड़ों का। दरअसल यह मंदिर एक चट्टान को खोखला कर इस प्रकार बनाया गया था कि छत स्तंभ शिखर सभी उसी चट्टान में से तराशकर बनते चले गए थे। इसी धर्मराजेश्वर में शिवरात्रि पर विशाल मेला लगता था। लोगों की मान्यता थी कि शिवरात्रि में मंदिर में ही रात बिताने पर भावी पुनर्जन्मों में से एक जन्म कम हो जाता है। यानी मोक्ष की ओर एक कदम और। इसी मान्यता के चलते शिवरात्रि में पहले से ही भक्तजन परिवार, इष्टमित्रों के साथ मंदिर की ओर चल पड़ते और भजन, पूजन करते हुए अपनी रात धर्मराजेश्वर में ही बिताते। हजारों की संख्या में भीड़ जुटने से वहाँ दुकानदार भी पूजन-सामग्री और खाने-पीने की वस्तुएँ, कपड़े, बरतन, आभूषण लेकर आते और खेल-तमाशे, जादूगर, सपेरे, नट भी आकर मेले को पूर्णता दे देते। पर इस बार धर्मराजेश्वर में सन्नाटा है, शिवरात्रि की कोई चहल-पहल नहीं है। वयोवृद्ध पुजारी मंदिर के प्रांगण में पथरीली शिला पर हताश, श्रीहीन होकर बैठे हैं। शैवों और वैष्णवों की शत्रुता ने इस पूरे क्षेत्र के जन-जीवन को, उसके सहज आनंद उत्सवों को उजाड़ दिया है। रक्तपात के भय से शिवरात्रि उत्सव सामूहिक न रहकर व्यक्तिगत होने पर विवश हुआ है। लोग आक्रोश में हैं, गुस्सा खदक रहा है, पर शांति के आवरण के नीचे। स्थिति तनावपूर्ण है, पर नियंत्रण में है, क्योंकि दोनों पक्ष अंदर-ही-अंदर अगले उपद्रव की तैयारी कर रहे हैं। शैवों का दावा है कि यह मंदिर हमारा है, क्योंकि

इसमें काले पाषाण का तेजोमय शिवलिंग सदियों से जगमगा रहा है। वैष्णवों के मन में फाँस है कि दो सौ वर्ष पहले पद्मनाभ भगवान् विष्णु की प्रतिमा के रहते शैवों ने बलपूर्वक यहाँ शिवलिंग स्थापित कर उनकी श्रद्धा को चुनौती दी थी, पर शैव राजसत्ता के बाहुबल के आगे वे मौन रहने को विवश थे। अब जब शैव सत्ताच्युत हुए हैं तो पूर्व में हुए अन्याय को मिटाने की इच्छा दिनोदिन सशक्त हो उठी है। शैव और वैष्णवों की आपसी कलह से त्रस्त प्रजा गौतम बुद्ध के शांति एवं अहिंसा के संदेश को ध्यान से सुन रही है। दो की लड़ाई में तीसरे का लाभ सहज ही होता है। यही धर्मराजेश्वर में भी हो